www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 6, 1-3

Article ID: 187

छोटे किसानों के लिए फायदेमंद है लोबिया की खेती

कमल शर्मा और रुचि बिश्नोई

कृषि विश्वविध्यालय, कोटा

लोबिया एक पौधा है जिसकी फलियाँ पतली] लम्बी होती हैं। इनकी सब्ज़ी बनती है। इस पौधे को हरी खाद बनाने के लिये भी प्रयोग में लाया जाता है। लोबिया एक प्रकार का बोड़ा है। इसे 'चौला' या 'चौरा' भी कहते हैं। यह सफेद रंग का और बहुत बड़ा होता है। इसके फल एक हाथ लंबे और तीन अंगुल तक चौड़े और बहुत कोमल होते हैं और पकाकर खाए जातै हैं। लोबिया हरी फली, सूखे बीज, हरी खाद और चारे के लिए पूरे भारत में उगाने जाने वाली वार्षिक फसल है। यह अफ्रीकी मूल की फसल है। यह सूखे को सहने योग्य, जल्दी पैदा होने वाली फसल और नदीनों को शुरूआती समय में पैदा होने से रोकती है। यह मिट्टी में नमी बनाए रखने में मदद करती है। पंजाब के उपजाऊ क्षेत्रों में इसकी खेती की जाती है। लोबिया प्रोटीन, कैल्शियम और लोहे का मुख्य स्त्रोत है| लोबिया का दाना मानव आहार का पोष्टिक घटक है तथा पशुधन चारे का सस्ता स्रोत भी है| इसके दाने में 22 से 24 प्रोटीन, 55 से 66 कार्बोहाईड्रेट, 0.08 से 0.11 कैल्शियम और 0.005 आयरन होता है| इसमे आवश्यक एमिनो एसिड जैसे लाइसिन, लियूसिन, फेनिलएलनिन भी पाया जाता है।

जलवायु : लोबिया की खेती के लिए गर्म व आर्द्र जलवायु उपयुक्त हे। तापमान 24-27 डिग्री से. के बीच ठीक रहता है । अधिक ठेडे मौसम में पौधों की बढ़वार रुक जाती है।

भूमि : लगभग सभी प्रकार की भूमियों में इसकी खेती की जा सकती है। मिट्टी का पी.एच. मान 5.5 से 6.5 उचित है। भूमि में जल निकास का उचित प्रबंध होना चाहिए तथा क्षारीय भूमि इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं है।

बीज दर : साधारणतया 12-20 कि.ग्रा. बीज/हेक्टेयर की दर से पर्याप्त होता है। बीज की मात्रा प्रजाति तथा मौसम पर निर्भर करती है। बेलदार प्रजाति के लिए बीज की कम मात्रा की आवश्यकता होती है।

उन्नत किस्में

दाने के लिये- सी- 152, पूसा फाल्गुनी, अम्बा (वी- 16), स्वर्णा (वी- 38), जी सी- 3, पूसा सम्पदा (वी- 585) और श्रेष्ठा (वी- 37) आदि प्रमुख है|

चारे के लिये- जी एफ सी- 1, जी एफ सी- 2 और जी एफ सी- 3 आदि मुख्य है|

खरीफ और जायद हेतु- बन्डल लोबिया- 1, यू पी सी- 287, यू पी सी- 5286 रशियन ग्रेन्ट, के- 395, आई जी एफ आर आई (कोहीनूर), सी- 8, यू पी सी- 5287, यू पी सी- 4200, यू पी सी- 628, यू पी सी- 628, यू पी सी- 621, यू पी सी- 622 और यू पी सी- 625 आदि

राजस्थान- आर सी- 101, आर सी पी- 27 (एफ टी सी- 27) आदि

बीज उपचार:

बीजों की बुवाई से पहले थायरम 2 ग्राम + कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचार करना चाहिए| इसके

उपरान्त राईजोबियम कल्चर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करके बुवाई करना चाहिए

बुवाई का समय :

खरीफ- मानसून आने पर (जून शुरूआत से जुलाई के अंत तक)

रबी- अक्टूबर से नवम्बर माह (दक्षिण भारत)|

ग्रीष्मकालीन- मार्च द्वितीय सप्ताह से मार्च अन्तिम सप्ताह में (दाने के लिये) व फरवरी माह में चारे के लिये पहाडी क्षेत्रों में इसको अप्रैल से मई में लगाते है और हरी खाद के लिये जून मध्य से जुलाई का प्रथम सप्ताह में लगाते है

बुवाई की दूरी : झाड़ीदार किस्मों के बीज की बुवाई के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45-60 सें.मी. तथा बीज से बीज की दूरी 10 सें.मी. रखी जाती है तथा बेलदार किस्मो के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 80-90 सें.मी. रखते हैं। बुवाई से पहले बीज का राजजोबियम नामक जीवाणु से उपचार कर लेना चाहिए। बुवाई के समय भूमि में बीज के जमाव हेतु पर्याप्त नमी का होना बहुत आवश्यक है।

उर्वरण व खाद: गोबर या कम्पोस्ट की 20-25 टन मात्रा बुवाई से 1 माह पहले खेत में डाल दें। लोबिया एक दलहनी फसल है इसलिए नत्रजन की 20 कि.ग्रा., फास्फोरस 60 कि.ग्रा. तथा पोटाश 50 कि.ग्रा./ हेक्टेयर खेत में अंतिम जुलाई के समय मिट्टी में मिला देना चाहिए तथा 20 कि.ग्रा. नत्रजन की मात्रा फसल में फूल आने पर प्रयोग करें।

जल प्रबंधन

लम्बे समय से सूखा पड़ने पर सिंचाई करनी चाहिए| लोबिया में पुष्पन और फलीयों के भरने के समय यदि मिटटी में नमी की कमी होती है, तो उपज प्रभावित होती है| इसलिए सूखे के समय पुष्पन और फलीयों के भरने के समय मिटटी में नमी की मात्रा कम न होने दे| गर्मी की फसल के लिये सिंचाई अति आवश्यक होती है| आमतौर पर 5 से 6 सिंचाई की आवश्यकता 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए|

खरपतवार नियंत्रण : दो से तीन निराई व गुड़ाई खरपतवार नियंत्रण के लिए करनी चाहिए। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए स्टाम्प 3 लिटर/हेक्टेयर की दर से बुवाई के बाद दो दिन के अन्दर प्रयोग करें।

तुड़ाई : लोबिया की नर्म व कच्ची फलियों की तुड़ाई नियमित रुप से 4-5 दिन के अंतराल में करें। झाड़ीदार प्रजातियों में 3-4 तुड़ाई तथा बेलदार प्रजातियों में 8-10 तुड़ाई की जा सकती है।

उपज : हरी फली की झाड़ीदार प्रजातियों में उपज 60-70 क्विंटल तथा बेलदार प्रजातियों में 80-100 क्विंटल हो सकती है।

बीजोत्पादन : लोबिया के बीज उत्पादन के लिए गर्मी का मौसम उचित है क्योंकि वर्षा के मौसम में वातावरण के अंदर आर्द्रता ज्यादा होने से फली के अंदर बीज का जमाव हो जाने से बीज खराब हो जाता है। बीज शुद्धता बनाए रखने के लिए प्रमाणित बीज की पृथक्करण दूरी 5 मी. व आधार बीज के लिए 10 मी. रखें। बीज फसल में दो बार अवांछित पौधों को निकाल दें। पहली बार फसल के फूल आने की अवस्था में तथा दूसरी बार फलियों में बीज से भरने की अवस्था पर पौधे तथा फलियों के गुणों के आधार पर अवांछित पौधों को निकाल दें। समय-समय पर पकी फलियों की तुड़ाई करके बीज अलग कर लेने के बाद उन्हें सुखाकर व बीमारी नाशक तथा कीटनाशी मिलाकर भंडारित करें।

बीज उपज : 5-6 क्विंटल/हेक्टेयर

रोग नियंत्रण

जीवाणु झुलसा- नवजात पौधे भूरे-लाल होकर मर जाते है| पत्तियों पर अनियमित भूरे रंग के धब्बे बनते है, जो बाद में तने पर फैल जाते है और तना टूट भी जाता है| इससे फलियाँ भी प्रभवित होती है, जिससे दाना सिकुड़ जाता है| फसल पर कॉपर आक्सी क्लोराइड दवा की 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें|

लोबिया मोजेक- संक्रमित पौधो की पत्तियाँ पीली व आकार विकृत हो जाता है| रोग के वाहक एफिड के नियंत्रण के लिये मिथाइल डेमेटॉन 1 मिलीलीटर या इमिडाक्लोरोप्रिड 0.2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें और दूसरा छिडकाव 10 दिन बाद करें|

कीट प्रबंधन

लोबिया फली छेदक- इस कीट की इल्ली पत्तियों को रोल बनाकर

उपरी प्ररोह के साथ जाला बनाती है| इल्ली फली में छेद करके दाने को खाती है | पपद्ध इल्ली के नियंत्रण के लिये 2 प्रतिशत मिथाइल पेराथियान पाउडर की 25 से 30 किलोग्राम मात्रा का प्रति हेक्टेयर के हिसाब से बुरकाव करें या क्युनालफॉस 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिडकाव करें||

एफिड और जेसिड- ये कीट पौधे के रस को चूसकर उसे पीला व कमजोर कर देते है| इसकी रोकथाम के लिये मिथाइल डेमेटॉन 25 ई सी, 1 मिलीलीटर प्रति लीटर या डाईमेथोएट 30 ई सी, 1.7 मिलीलीटर प्रति लीटर के पानी से घोल बनाकर छिडकाव करें|